VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
MN 16 AUG 2022 No. 3
RECEIVED

SUBJECT:	BAJRANG PRASAD ESSAY	**Test Code:**	2 1 2 3
Name of Candidate			
Medium Hindi/Eng.	HINDI	**Registration Number**	5 7 8 2 9 2
Center	MN	**Date**	1 6 0 8 2 2

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

SECTION-A

"एक स्वस्थ निष्ठा निष्क्रिय और आत्मसंतुष्ट नहीं, बल्कि सक्रिय और आलोचनात्मक बनाती है।"

कोरोना महामारी के काल में जहाँ दुनिया स्वयंसीमित होती जा रही थी, वहीं भारत ने सक्रियता का रुप दिखाया। इसने न केवल जरूरतमंद देशों को दवा, जरुरी उपकरण, हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन इत्यादि उपलब्ध कराया बल्कि अपनी जरूरतों के साथ विश्व स्वास्थ्य प्राप्ति के लक्ष्य के प्रति भी निष्ठा दिखाया। सक्रियता के साथ भारत ने WTO के 'अनिवार्य लाइसेंसिंग' क्लाज एवं पेटेंट के अधिकार पर भी आलोचनात्मक रूख अपनाते हुए कोविड टीके पर छूट (IPR) की मांग की।

यह स्वस्थ निष्ठा

के सक्रिय एवं आलोचनात्मक स्वरूप को उद्घोषित करता है।

इस प्रकार हमें स्वास्थ्य निष्ठा के अर्थ, इसके आयाम एवं महत्व पर ध्यान देना होगा। साथ ही हम इसके विभिन्न बहुआयामी प्रभावों को सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर समझने का प्रयास करेंगे। भविष्य के विश्व की शांति एवं समृद्धि में इसके योगदान की संभावनाओं की तलाश भी समीचीन होगा।

निष्ठा से तात्पर्य किसी भी विचार, व्यक्ति, दर्शन, भाव आदि के प्रति जवाबदेही पूर्ण समर्पित दायित्व निर्वहन से है। स्वस्थ्य निष्ठा इस दायित्व के साथ विभिन्न लोकतांत्रिक नैतिक, विधिक एवं आधुनिक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

होने की माँग करती है।

स्वस्थ निष्ठा के आयामों की चर्चा करने पर हम पाते हैं कि इसका क्षेत्र वैयक्तिक से लेकर विश्वभावना के साथ उत्तरदायित्व को बताता है। यह आन्तरिक एवं बाह्य, क्षेत्रीय एवं समग्र, धार्मिक एवं दार्शनिक आदि व्यापक आयामों में अस्तित्व को स्वीकारता है।

स्वस्थ निष्ठा के महत्व का विवेचन व्यक्ति के सांसारिक पहलुओं से लगाव को उद्घाटित करता है। व्यक्ति का समाज के प्रति लगाव, भागीदारी, सदाचार की कोशिश इसकी ही अभिव्यक्ति है। स्वस्थ निष्ठा हमेशा हमें नैतिक मूल्यों से युक्त होने को प्रेरित करती है। यह सार्वभौमिक स्वीकार्यता को बढ़ावा देती है एवं अच्छे गुणों के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

स्रोतों की प्रकृति को न देखते हुए उनके ग्रहण की बात करती है। जैसे- भारतीय ऋग्वेद में कथित है —

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।"
'आदर्श विचारों को चारो दिशाओं से ग्रहण करना चाहिए।'

वर्तमान मे स्वास्थ्य निष्ठा की प्रासंगिकता को व्यापक परिप्रेक्ष्य मे विचारें तो इसके अनेकानेक आयाम, महत्व, कमी, प्रभाव, लाभ, आवश्यकता परिलक्षित होते हैं।

सामाजिक स्तर पर व्यक्ति द्वारा स्वास्थ्य निष्ठा का अभाव ही संस्कृति, महिला के प्रति हीन भावना, नैतिक ह्रास एवं संवेदनशीलता के अभाव को प्रेरित करता है। जैसे— उपभोगवादी संस्कृति; महिलाओं के प्रति हिंसाएँ,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

बलात्कार आदि।

स्वस्थ निष्ठा से युक्त लोगों ने ही निष्क्रियता को त्यागकर इसमें क्रांतिकारी बदलाव हेतु आंदोलन किया एवं आलोचनात्मक विचार के द्वारा सामाजिक सुधार की क्रांति को प्रेरित किया। जैसे - राजा राम मोहन राय (महिला सती प्रथा विरुद्ध), सावित्री फुले (महिला शिक्षा), पेरियार (छुआछूत विरोधी आंदोलन)।

आज समाज में अस्पृश्यता (जालौर (RJ) में मटकी का पानी पीने के कारण उच्च वर्ण के शिक्षक द्वारा दलित मासूम (8-वर्षी) बच्चे की निर्मम हत्या); धार्मिक असहिष्णुता जनित अपराध (उदयपुर हत्याकांड) आदि घटनाएँ इसी स्वस्थ निष्ठा के अभाव को दिखाती हैं।

एक स्वस्थ निष्ठा का होना व्यक्ति में नैतिकता, अधिकार उन्मुख, कर्तव्यवादी, प्रगतिशील, राष्ट्रवादी विचारधारा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को प्रेरित करता है जो एक प्रगतिशील नागरिक का आधार मानक है। ऐसे गुणों से युक्त नागरिक राष्ट्र को विकृतियों से मुक्त करने में, राजनीतिक संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने में (मताधिकार का उचित प्रयोग) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संघीय आधार पर स्वस्थ निष्पादन का होना विकास को प्रेरित करती है। इसमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, संघर्ष एवं सहयोगात्मक विकास की प्रवृत्ति पाई जाती है। भारत में केरल, उत्तरप्रदेश आदि राज्यों में यह प्रतिस्पर्धा की विकासवादी भावना जन कल्याण में सरकार की निष्ठा को दिखाते हुए इन्हें सक्रिय बनाती है।

राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वस्थ, नैतिक, जवाबदेही एवं लक्ष्य उन्मुख निष्ठाएँ

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शांति एवं समावेशी विकास को प्रेरित करती है। स्वस्थ निष्पक्ष से युक्त राज्य की सरकारें व केन्द्र जन सरोकारों को लक्ष्य रखते हुए परस्पर संघवादी (सहयोगात्मक संघवाद) भावना को मजबूत करते हैं।

स्वस्थ निष्पक्ष से युक्त प्रतिनिधि, प्रशासक, नीति-निर्माता प्रतिनीतियों को अधिक-से-अधिक कल्याण केन्द्रित बनाते हुए सक्रियता पूर्वक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय हेतु तैयार करते हैं।

शब्द विकास एवं लोकतंत्र में सच्चे विकास की निष्पक्ष ही सरकार में विपक्ष को सक्रिय एवं स्वस्थ आलोचना हेतु प्रेरित करती है। हालिया समय में सरकार एवं विपक्ष के बीच बढ़ता अविश्वास जनित अन्तराल संसदीय लोकतंत्र को कमजोर करता जा रहा है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

आज राष्ट्र में व्याप्त बुराइयाँ एवं कमियाँ जिनमें भ्रष्टाचार, परिवारवादी राजनीति - प्रशासन, धार्मिक तनाव इन्हीं स्वस्थ निष्ठाओं की कमी को दिखाते हैं।

भारत में इन्हीं निष्ठा की महत्ता एवं जरूरत को लक्षित करते हुए अम्बेडकर जी ने कहा था - 'शिक्षित जनों का सत्यनिष्ठ होने पर यह कर्तव्य है कि वह समाज को गलत विचारों, कुरीतियों आदि के प्रति जागरूक करें एवं समाज को लोकतांत्रिक, शिक्षित एवं समता, स्वतंत्रता एवं न्याय के घटकों से युक्त कराने में मदद करें।'

स्वस्थ निष्ठा की भावना गुटबंदी को रोकती है एवं उदारीकरण के साथ 'सबका साथ - सबका विकास - सबका विश्वास' के भाव को प्रेरित

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

करती है। 20वीं सदी में हुए दोनो विश्व-युद्ध, 1990 के बाद शीत युद्ध के दौरान ध्रुवीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों का पश्चिमी विकसित देशों के प्रति झुकाव इसे मानव कल्याण, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की निष्ठा की कमी दिखाता है।

वर्तमान में नागरिकों एवं सरकार के बीच आपस में सक्रियता एवं निष्ठा का अभाव, सक्रिय आलोचनाओं पर सकारात्मक प्रयासों की कमी ने विश्व में अनेक देशों में अशांति को जन्मा है। जैसे- म्यांमार में तख्तापलट, श्रीलंकाई संकट, अफ्रीकी राष्ट्रों में गृहयुद्ध।

हालिया विश्व में वैश्विक नागरिकता के मूल्यों के अभाव ने राष्ट्रों के मध्य युद्ध को प्रेरित किया है। रूस-यूक्रेन युद्ध स्पष्ट निष्ठा की कमी को परिलक्षित करते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हालांकि इसका दूसरा पहलू भी उतना ही महत्वपूर्ण है - 'सक्रिय एवं आलोचनात्मक रवैये की कमी के कारण संस्थान/व्यक्ति अपने प्रति लोगों/दिकारियों की सम्बद्धता को खोते जाते हैं।' जैसे →

वर्तमान में विश्व में अव्यवस्था, बढ़ती उत्तर-दक्षिण दूरी, तनाव, युद्ध, गरीबी-भुखमरी का बढ़ता अन्तराल, पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए जिम्मेदारों पर कड़ी कार्यवाही के अभाव ने UN (संयुक्त राष्ट्र) संस्थान एवं इसके अन्य अंगों के प्रति शब्दों में निष्ठा की कमी को दिखाया है।

वर्तमान में विश्व स्तर पर व्याप्त चुनौतियाँ जिनमें कुपोषण, निर्धनता, चरमपंथ (इस्लामोफोबिया), तानाशाही या अधिनायकवादी सरकार (म्यांमार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

AFG (तालिबान) में); पर्यावरणीय चुनौतियाँ; आतंकवाद, वुल्फ गैंग हमला, मानव-हथियार-पशु तस्करी, साइबर अपराध आदि किसी न किसी स्तर पर स्वस्थ निष्ठा के अभाव एवं इसके निवारण के लिए आवश्यक सक्रियता एवं आलोचना की कमी को दिखाते हैं।

भारत वर्तमान में जिन समस्याओं का सामना कर रहा है उनमें नकारात्मक रूप से प्रभावित ~~सत्य~~ निष्ठा अधिक है। कभी-कभी तथाकथित सिद्धांतों के अक्षरशः अनुपालन को ही निष्ठा मान बैठते हैं जिसका परिणाम घातक होता है।

आज लोगों में अपने धार्मिक आदेशों की अक्षरशः शर्त किसी भी कीमत पर की जाने की अपेक्षा देखी जा रही है। जैसे- चरमपंथ एवं नक्सलवाद (मार्क्सवादी हिंसात्मक विचारधारा से प्रभावित);

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

कट्टरपंथी हिंदुत्व या इस्लामिक औतियाँ (कुछ धार्मिक आकाओं के वचनों से प्रेरित); मोबलिंचिंग (अति धार्मिक नैतिकता); चरित्र पाप (हिंसा कांड के आरोपितों का कर्म सम्मान); घृणा सैन्य (धार्मिक उन्माद फैलाने हेतु) आदि प्रमुख हैं।

यह तथाकथित सिद्धांत लोगों में नकारात्मक निष्ठा को प्रेरित करने का प्रयास करते हैं जिसका परिणाम समाज में अव्यवस्था, अशांति के रूप में आता है।

स्वस्थ निष्ठा का भाव विश्व शांति को प्रेरित करते हुए संधारणीय एवं सतत विकास के साथ ~~ईष्टतम~~ ~~प्रगति एवं~~ संसाधन दोहन की क्षमता रखता है। आज आवश्यकता है विश्व को अपने स्वयं (अहं)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

से बाहर निकलकर विश्व भावना से भरने की। यह न केवल सक्रियता को बढ़ायेगा बल्कि विश्व के समस्त राष्ट्र आगे मिलकर पारस्परिक सहयोग की भावना से जन कल्याण से विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

स्वस्थ निष्ठा की प्रकृति एवं स्वरूप की बेहतर जानकारी एवं समझ हमारी प्रकृति (Nature) स्वयं देती है। प्रकृति के समस्त तत्व (जल, वायु, पृथ्वी आदि) हमें 'निःस्वार्थ निरन्तर कर्तव्यपरायणता,' 'निरन्तर देने की प्रकृति' जैसे मूल्यों को सिखाते हैं। वह अपने असंतुलन को स्वतः समायोजित भी करती है, विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं के द्वारा। आज मानवीय सभ्यता को निष्ठा एवं कर्तव्य के बीच संबंध बनाने का यही अवसर है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

SECTION-B

'जो मितव्ययिता को नहीं अपनाएगा उसे कष्ट में रहना पड़ेगा।'

मरुस्थलीकरण के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र अभिसमय ~~के~~ (UNCCD) के मुताबिक - दुनिया के अधिकांश भागों में वनों की अंधाधुंध कटाई, अतिचारण से मृदा अपरदन, मौसमी प्रकृति में बदलाव एवं बढ़ते मरुस्थलीकरण ने मृदा उर्वरता को नुकसान पहुँचाया है और अब उत्पादन की लागत में लगातार वृद्धि हो रही है जिसका खामियाजा निम्न आय वर्गों की एक बड़ी आबादी को उठाना पड़ रहा है।'

भूटान जिसकी आर्थिक विकास एवं वृद्धि विशेषतः प्राकृतिक घटकों के साथ संधारणीय एवं स्थायी है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वह न केवल प्राकृतिक सौन्दर्य एवं संसाधनों को सहेजने में अधिशेष (Surplus) है बल्कि विश्व प्रसन्नता सूचकांक में भी शीर्ष स्थान पर काबिज़ है।

उपरोक्त दोनों उदाहरण हमें बखूबी समझाते हैं कि मितव्ययिता के परिणाम जो सामान्यतः कष्ट को बढ़ाते हैं वहीं अल्पतम एवं जवाबदेहीपूर्ण उपभोग निश्चितता एवं प्रसन्नता को आकर्षित करते हैं।

उपरोक्त कथन के विस्तार अवलोकन में हम मितव्ययिता का अर्थ प्रकार को जानने का प्रयास करेंगे। हम साथ ही इसके अनुपालन करने या न करने के सकारात्मक या एवं प्रतिकूल परिणामों पर उदाहरण सहित दृष्टिपात करेंगे। हम यह भी देखेंगे कि किस जगह पर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मितव्ययिता भी प्रतिकूल परिणाम देती है।
क्या सभी जगह मितव्ययिता अनिवार्य है
या उसका उद्देश्यविशिष्ट होना जरूरी है?

मितव्ययिता के सामान्य अर्थ को देखें तो मितव्ययिता = मित + व्ययी
(भाव) (पुरुषवाचक संज्ञा)
अर्थात् - अल्प खर्च करने वाला। मितव्ययिता शब्द का सरोकार बहुत ही प्राचीन समय से रहा है क्योंकि संसार में सभी प्रकार के अचल-अचल, जीवित-अजीवित, मानव-मानवेत्तर आदि संसाधनों को सीमित ही माना गया है अतः इसकी प्रासंगिकता अत्यधिक है।

मितव्ययिता के अन्य प्रकारों पर चर्चा करें तो यह मूर्त - अमूर्त दोनों स्तरों पर हो सकता है। मूर्त रूप में यह पृथ्वी पर स्थापित, अंतरिक्ष, अन्तरराष्ट्रीय

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

आदि संधान संसाधनों के परिप्रेक्ष्य में हो सकता है वहीं अमूर्त स्वरूप में यह भाव, विचार आदि को ग्रहण करता है।

मितव्ययिता का सबसे व्यापक लाभ होता है - 'उक्त/अमुक वस्तु' का ईष्टतम दोहन के साथ सतत बने रहने का सामर्थ्य। सतत विकास लक्ष्यों (SDG-12) में 'उत्तरदायी उपभोग एवं उत्पादन' का मर्म मितव्ययिता को ही परिलक्षित करना है।

मितव्ययी होना व्यक्ति को जवाबदेह बनाती है। यह व्यक्ति की इच्छाओं पर नियंत्रण करना सिखाती है। मितव्ययिता संतुष्टि की दिशा में पहला कदम है। हमारी परंपरा में 'संतोषं परं सुखं' की अवधारणा का मूल आधार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अल्पव्ययी होना है।

मितव्ययिता के अभाव का परिणाम हम अनेक उदाहरणों से जानने का प्रयास करेंगे। प्राकृतिक अनवीकरणीय संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने जहाँ एक तरफ उनके समाप्ति की ओर उन्मुख किया है वहीं उससे अप्रत्याशित अपवाद परिणाम दुनिया को प्रभावित कर रहे हैं। आज संसार में पारिस्थितिकी का असंतुलित दोहन अनेक चुनौतियों को जन्म दिया है।

क्षेत्रीय आधार पर देखें तो विश्व में यूरोपीय एवं अमेरिका के विकसित देश भारत की तुलना में ऊर्जा का लगभग पाँच गुना दोहन करते है। उनके अतिदोहन की प्रणाली एवं मांग का प्रभाव दुनिया के अन्य देशों में भी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रहा है। जहाँ गरीब देश इन संसाधनों की अल्प उपलब्धता के कारण कीमत (बढ़ी) से अपनाने में असमर्थ हैं वहीं इनका अनैतिक उपयोग भी हो रहा है।

आज मितव्ययिता के कारण कल्याण के अन्य क्षेत्र प्रभावित हो रहे हैं। राष्ट्रों में आयातित वस्तुओं पर अधिक निर्भरता एवं व्यय ने देश में कल्याणकारी व्यय को सीमित किया है। जैसे भारत में तेल आयात से वाह्य भुगतान असंतुलन हुआ है।

मितव्ययिता को अपने हित, क्षेत्र से व्यापक होकर देखने की जरूरत है। जैसे अगर संसाधन प्रचुरता वाले राष्ट्र यह सोचें कि हम कितना भी दोहन करें हमें परेशानी नहीं होगा तो यह भूल उनके साथ दुनिया में अन्य

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जगह कौनी परेशानी में डालेगी।

वर्तमान में रूस द्वारा यूक्रेन पर किए गए आक्रमण का एक कारण यूक्रेन के पूर्वी क्षेत्र की संसाधन में प्रचुरता भी है। जो रूस को भविष्यगत आवश्यकता के कारण प्रेरित किया है।

मितव्ययिता का स्वीकार पृथ्वी पर पाए जाने वाले संसाधनों के स्थानिक वितरण होते हुए उपभोग से है। यदि हम समस्त संसाधनों पृथ्वी को एक मात्र मानकर दोहन करें तो यह भावना अधिक बलवती होगी कि हम अधिकाधिक अल्पव्ययी बनें।

पर्यावरणीय समस्याओं पर व्यापक दृष्टि डालें तो हम देखते हैं कि इसके तत्वों/घटकों का हनन लाखों सालों में होता है अतः हमारे द्वारा

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

किया गया और - जवाबदेहीशून्य अतिदोहन हमारे सामने विकट समस्याओं को खड़ा करता है। उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा की अनुर्वरता दीर्घकालिक संकट को आमंत्रित करता है।

प्लास्टिक जैसे लम्बे समय तक न नष्ट होने वाले पदार्थों के अत्यधिक उपभोग ने बहुआयामी समस्याओं को जन्म दिया है। यह मृदा अनुर्वरता, समुद्री वाटिलिटि पर प्रभाव (जैव विविधता, मत्स्य पालन), मृदा रिसाव से प्रभावित, जलाने पर हानिकारक गैसें जैसे दुष्परिणाम उत्पन्न किए हैं।

अतिव्यापिता के परिणामों को समस्त लोगों को भोगना पड़ता है। प्रसिद्ध समाज विज्ञानी 'माल्थस' ने बढ़ती आबादी को मितव्ययी होने का सुझाव

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दिया है, अन्यथा इन्होंने आगाह किया है कि प्राकृतिक संसाधनों की जनसंख्या के अनुरूप न बढ़ने की प्रवृत्ति, विश्व में आपदा को आमंत्रित करेगी जो उसके आत्मसंतुलन की प्रणाली का हिस्सा है।'

आज दुनिया दो विरोधाभासों का सामना कर रही है एक अतिआबादी जनित गरीबी वहीं दूसरा आबादी के अभाव में बढ़ती शून्यता। यह उपभोग का ही अन्तर है। अति आबादी से गरीबी से पीड़ित अधिकांश विकासित देश हैं, वहीं शून्यता की तीव्रता से अधिकांशत: केंद्रित एवं अल्पविकसित एवं विकासशील है।

यह दोनों तरीके से समस्या आमंत्रित करती है — एक मोटके

हेतु स्वास्थ्य पर बोझ, इससे गरीबी से जीवन व मानव संसाधन का क्षय अगर हम जवाबदेही एवं उत्तरदायित्व अमोघ को सम्पूर्ण तरीके से करें तो दोनों समस्याओं को हल किया जा सकता है।

अब हम अमूर्त रूप पर मितव्ययिता या अतिव्ययिता की चर्चा करें तो कुछ स्तरों पर मितव्ययी होना सार्थक एवं आवश्यक नहीं है।

शिक्षा, विचार, नैतिक मूल्यों का अल्पप्रचार / अल्पव्ययी होना सामाजिक प्रगति में बाधक है। आत्मकेंद्रिता या अत्यधिक स्वकेंद्रिता कदापि प्रगतिशीलता का मार्ग नहीं हो सकता है।

हम यह देखते हैं जिन राष्ट्रों ने आधुनिक विचारों,

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मूल्यों, आधुनिक शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार किया वह आज दुनिया में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली, नवाचार एवं विकासवादी विश्व का नेतृत्व कर रहे हैं। इसका लाभ इन्हें अभूत स्तर पर व्यापक हुआ है। 18वीं सदी के दौरान यूरोप में आई वैचारिक क्रांति ने वहाँ औद्योगिकीकरण को प्रेरित किया जिसका परिणाम सकारात्मक चक्र के रूप निरंतर विकास को बढ़ाया और विकसित राष्ट्रों के रूप में निर्मित हुए।

वहीं दूसरी तरफ पिछड़ी दुनिया के देशों में आधुनिक विचारों का अलनपय एवं धार्मिक रूढ़िवादी कुरीतियों के अतिव्याप्त ने यहाँ गरीबी, गुलामी, सामाजिक विकृति की निरन्तरता को

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जारी रखा।

आज दुनिया जहाँ वैज्ञानिक क्रांति के क्रांतिकारी लाभों से परिचित है। वहीं हमें इसके सकारात्मक लाभों को संसाधनों की मितव्ययिता से समेकित करना होगा। जैसे - 3D-प्रिंटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उन्नत कम्प्यूटिंग, बायो-टेक आदि मितव्ययिता को प्रेरित करके लोगों को अत्यधिक लाभयुक्त एवं संतुष्ट बना सकते हैं।

दुनिया के विकसित देशों को आज तक हुए अतिदोहन के उनकी जिम्मेदारी लेनी पड़ेगी (औद्योगीकरण का अधिक लाभ विकसित देशों को एवं वैश्विक तापन के प्रमुख कारण भी वही) एवं अन्य आकांक्षी पिछड़े राष्ट्रों को वित्तीय, तकनीकी, प्रौद्योगिकीय सहायता द्वारा इष्टतम उपभोग

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को प्रेरित करना होगा।

आज हमें आवश्यकता है कि प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगित व अप्रयोगित संसाधनों जैसे - ऊर्जा में सौर, पवन, भूतापीय आदि; वैज्ञानिक एवं मानवीय बौद्धिक संसाधन में आधुनिक तकनीक, IPR आदि; बौद्धिक योगदान आदि द्वारा दुनिया में नए विकास के प्रतिमान को गढ़ा जाये।

हम आकांक्षी राष्ट्रों को प्रेरित कर, आधुनिक तकनीकी आदि सहायता देकर उन्हें अपने उपलब्ध संसाधनों के कुशल एवं दक्ष दोहन हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

खुशी एवं प्रसन्नता का स्रोत मितव्ययिता, आत्मसंतुष्टि एवं न्यायपूर्ण बंटवारे का भाव ही है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

दुनिया के समस्त राष्ट्रों को एक साथ आते हुए प्रकृति का ईष्टतम दोहन करते हुए सतत एवं संधारणीय विश्व का लक्ष्य पाना ही होगा। हमें यह विचार हमेशा याद रखना चाहिए —

'यदि हम अपने अगली पीढ़ी को कुछ अधिक नहीं दे सकते तो हमें यथावत स्वरूप में उतना देना ही होगा जितने हमने अपनी पिछली पीढ़ी से पाया था तभी सफलता का प्रवाह निरंतर होगा।'